International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिक रूपरेखा

Vishal Sharma

Ph.D. Research Scholar Department of Political Science Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India.

शोध-सार

भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इस परम्परा में सदैव से ही अन्तरिक्ष को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। प्राचीन भारत में इस बात के कई प्रमाण मिलते हैं कि राजव्यवस्था के संचालन में ज्योतिष शास्त्र की सहायता ली जाती थी। इसके लिए दो अनुशासनों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। यदि ज्योतिष शास्त्र और राजनीति विज्ञान को मिलाकर संयुक्त अध्ययन किया जाए तो मानव जीवन में आने वाली आकाशीय या खगोलीय घटनाओं से उत्पन्न समस्याओं का कारणों सहित समाधान प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए एक नए अनुशासन **'राजनीति ज्योतिष शास्त्र'** का अध्ययन पर्याप्त है। इस शोध-पत्र में राजनीति विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र के संयुक्त अध्ययन से एक नए अनुशासन राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। शोध-पत्र में आगमनात्मक शोध-पद्धति का सहारा लिया गया है। शोध-विषय के विवेचन में प्राचीन एवं आधुनिक दोनों ही साहित्य का प्रयोग किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द 'राजनीति शास्त्र', 'ज्योतिष शास्त्र', 'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र', 'दर्शन शास्त्र'

शोध-पत्र में प्रयुक्त कठिन शब्द और उनके अर्थ

ज्योतिष- वेद का नेत्र, **पिण्ड**- पदार्थों का सघन रूप, **राशि**- मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन, **ग्रह**- सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु।

शोध-प्रविधि आगमनात्मक शोध पद्धति

शोध-पत्र का उद्देश्य

किसी भी स्वतन्त्र अनुशासन के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह पूर्ण व्यवस्थित हो। उसका अर्थ, परिभाषा, निर्धारित क्षेत्र और अध्ययन की पद्धतियाँ हों। ये समस्त मूलभूत आवश्यकताएं किसी भी अनुशासन को एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित करने के लिए अनिवार्य हैं। राजनीति विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र के संयुक्त अध्ययन से एक नए अनुशासन **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** के अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र और अध्ययन की पद्धतियाँ निर्धारित कर **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिक रूपरेखा'** प्रस्तुत करना इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

परिचय

राजनीति विज्ञान ने अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ समायोजन स्थापित कर स्वयं के विकास में विशेष ध्यान दिया। राजनीति विज्ञान दर्शन शास्त्र की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ है। कालान्तर में यही राजनीति विज्ञान एक स्वतंत्र अनुशासन बना। राज्य के चार तत्व हैं- क्षेत्रफल, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता। राज्य के तत्वों में क्षेत्रफल सदैव स्थिर रहता है जबकि जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता में परिवर्तन होते रहते हैं। एक वैधानिक राज्य में संवैधानिक संप्रभुता अनिवार्य तत्व है। यही संप्रभुता राज्यों के मध्य राजकीय सम्बन्धों को विकसित करती है। कालान्तर

में यही राजकीय सम्बन्ध अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के रूप में अस्तित्व में आए। इन्हीं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के रूप में किया जाता है।

राज्य के अगले तत्व सरकार पर विचार करें तो यह पता चलता है कि राज्यों में शासन का संचालन संविधान के अनुरूप किया जाता है। राज्यों के संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन तुलनात्मक राजनीति के अन्तर्गत किया जाता है। अरस्तू प्रथम विचारक है जिसने राज्यों के संविधानों का सर्वप्रथम तुलनात्मक अध्ययन किया। राज्य की कार्यपालिका संविधान के अनुरूप राज्य के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शासन का स्वरूप व्यवस्थापिका जबकि प्रशासन का स्वरूप कार्यपालिका है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने प्रशासन के सुधार की तरफ ध्यान दिया। तब राजनीति विज्ञान जगत को लोक प्रशासन के रूप में एक नया अनुशासन मिला, जिसने प्रशासन के क्षेत्र में सुधारात्मक परिणाम दिए।

राज्य की सीमाओं का निर्धारण क्षेत्रफल में ही दिखता है। यही राज्य की सीमाओं का निर्धारण करता है। इसी क्षेत्रफल में निवास करने वाली जनसंख्या उस राज्य के नागरिक कही जाती हैं। राज्य के नागरिक जीवन जीने के नियम भौगोलिक स्थिति के अनुरूप बनाते हैं जिसमें भोजन, आवास, भाषा और रहन-सहन का निर्माण करते हैं। जीवन जीने की यही व्यवस्था राज्य की संस्कृति कही जाती है। राजनीति विज्ञान जगत में संस्कृति का अध्ययन राजनीतिक संस्कृति के रूप में किया जाता है। चूँकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अतः मनुष्य की अपनी मनोदशा है। मनोदशा का अध्ययन मनोविज्ञान करता है और राज्य का संचालन राज्य के नागरिक द्वारा किया जाता है। राज्य के नागरिकों का हित ही राष्ट्रीय हित है। राष्ट्रीय हित का अध्ययन करने लिए राज्य की सामूहिक मनोदशा का अध्ययन अनिवार्य है। इसके लिए मनोविज्ञान का सहारा लिया लिया जाता है। राजनीति विज्ञान जगत में इस अध्ययन को राजनीतिक मनोविज्ञान कहा जाता है।

हमारी धरती सौरमण्डल का हिस्सा है। धरती पर जीवन का कारण सूर्य है और सूर्य ही हमारे सौरमण्डल का जनक भी है। भारतीय संस्कृति में अन्तरिक्ष का अध्ययन ज्योतिष शास्त्र के रूप में किया गया है। इसका प्रमाण आचार्य आर्यभट्ट, आचार्य वराहमिहिर और आचार्य भास्कर प्रथम द्वारा रचित ग्रंथों में मिलता है। ज्योतिष के पाँच स्कंधों में से प्रथम तीन स्कन्ध सिद्धांत, संहिता और होरा अन्तरिक्ष की घटनाओं का धरती पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हैं। धरती पर राज्य जनसंख्या के लिए निर्मित किए गए हैं और जनसंख्या का सुख ही राज्य का उद्देश्य है। ज्योतिष शास्त्र स्वयं में एक स्वतन्त्र अनुशासन है और राज्य के तत्व 'जनसंख्या' को खगोलीय प्रभावों से परिचित करता है। अन्तरिक्ष का अध्ययन कर मानव समुदाय की समस्या के मूल कारणों को समझा जा सकता है। राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का इस प्रकार संयुक्त अध्ययन एक नए अनुशासन '**राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र**' के रूप में किया जा सकता है।

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें राजनीतिक का सम्बन्ध राजनीति शास्त्र से है। राजनीति शास्त्र का अर्थ है- राज्य सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन जबकि ज्योतिष शास्त्र का अर्थ है- अन्तरिक्ष का अध्ययन । ज्योतिष को वेदों का नेत्र भी कहते हैं। ज्योतिष के अन्तर्गत आकाशीय पिण्डों, ग्रहों, तारों, तारामण्डलों और राशियों का अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र का अर्थ है- राज्य सम्बन्धित गतिविधियों का अन्तरिक्षीय अध्ययन। **"राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र को परिभाषित करते हुये कहा जा सकता है, राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के मूल बिन्दुओं को समाहित करके ब्रह्माण्ड व मानव समाज की संरचना का समाकलित अध्ययन किया जाता है।"**[1]

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की अध्ययन पद्धति

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन की चार पद्धतियाँ निर्धारित की जा सकती हैं –

1. प्रयोगात्मक पद्धति
2. ऐतिहासिक पद्धति
3. तुलनात्मक पद्धति
4. निरीक्षणात्मक पद्धति

प्रयोगात्मक पद्धति

"प्रयोगात्मक पद्धति का अनुसरण मुख्य रूप से भौतिक विज्ञानों में किया जाता है। प्रयोगशाला में वैज्ञानिक अपने द्रव्य अथवा पदार्थ पर प्रयोग करके प्रकृति के नियमों अथवा रहस्यों को जानने का प्रयास करता है। यह माना जाता है कि भौतिक विज्ञानों में प्रयोगात्मक पद्धति से वैज्ञानिक ऐसे नियमों को स्थापित करने में सफल रहा है किन्तु राजनीति शास्त्री के लिये इस प्रकार की प्रयोगशाला की सुविधा नहीं है जिसमें कि वह अपने अन्वेषण के पदार्थ का परीक्षण कर सके; सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था उसके अध्ययन का संसार है। रसायन शास्त्र के विद्यार्थी के लिये यह सुलभ है कि वह ऑक्सीजन का परीक्षण न्यूयार्क की किसी प्रयोगशाला में करे अथवा नई दिल्ली की प्रयोगशाला में, उसे परीक्षण हेतु आक्सीजन चाहे जितनी मात्रा में उपलब्ध हो सकता है और परीक्षण करने के साधन भी किन्तु राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी राजनीतिक क्रान्तियों का अध्ययन करने के लिये क्रान्ति की समस्त परिस्थितियों को अपनी प्रयोगशाला में परीक्षण के लिये नहीं जुटा सकता और न ही वह ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति करा सकता है।"(2) इस प्रकार राजनीति विज्ञान के अध्ययन में प्रयोगात्मक पद्धति सामान्यतः प्रचलित नहीं है किन्तु ज्योतिष शास्त्र एक पूर्णतः वैज्ञानिक विषय है जिसमें खगोलीय पिण्डों की गति के आधार पर गणनाएं की जाती हैं। अतः राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग स्वाभाविक है।

ऐतिहासिक पद्धति

"ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग राजनीतिशास्त्र में बहुलता से दीर्घकाल से ही किया जाता रहा है। इस पद्धति में भिन्न-भिन्न देशों और कालों की संस्थाओं और व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है और उस विश्लेषण के आधार पर उन संगठनों अथवा व्यवस्थाओं के बारे में व्यापक नियमों की स्थापना करने की चेष्टा की जाती है। राजनीतिशास्त्र में अरस्तू, मॉण्टेस्क्यू, एडमंड बर्क तथा लार्ड ब्राइस ने राजनीतिक व्यवस्था तथा राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन के लिये ऐतिहासिक पद्धति का ही अनुसरण किया था। राजनीतिक संस्थाओं और व्यवस्थाओं की उत्पत्ति, उनका विकास, उनका पतन, उनकी सफलताएँ असफलताएँ इत्यादि का ऐतिहासिक पद्धति द्वारा समुचित किया जाता है और उनके आधार पर निष्कर्षों को स्थापित किया जाता है।"(3) साथ ही ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में भी ऐतिहासिकता महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अतः राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग निर-अपवाद रूप से किया जाना अनिवार्य है।

तुलनात्मक पद्धति

"तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग भी राजनीतिशास्त्रियों द्वारा किया जाता है। अरस्तू, मॉण्टेस्क्यू, डी. टॉकवील तथा सर हैनरी मेन इत्यादि ने इस पद्धति का अनुसरण किया है। वास्तव में तुलनात्मक पद्धति ऐतिहासिक पद्धति की पूरक है। तुलनात्मक पद्धति के द्वारा विभिन्न शासनों, राज्यों, उनकी नीतियों इत्यादि के बारे में तथ्यों का संग्रहकिया जाता है, उन्हें यथाक्रम रूप से व्यवस्थित किया जाता है और उन विविध तथ्यों से सामान्य तत्वों की खोज की जाती है। उदाहरणार्थ, अरस्तू ने अपने ग्रंथ 'राजनीति' में शासन के विभिन्न प्रकारों का तुलनात्मक पद्धति के आधार पर अध्ययन किया है। अपने समय की प्रचलित राजतंत्र, निरंकुशतंत्र, अल्पतंत्र, धनिकतंत्र अथवा लोकतंत्र जैसी शासन व्यवस्थाओं

की क्या विशेषताएँ, अच्छाइयाँ दुर्बलताएँ हैं, इनके सम्बन्ध में अरस्तू तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग कर श्रेष्ठ शासन सम्बन्धी अपने निष्कर्षों को निकालता है। तुलनात्मक पद्धति घटनाओं का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करती है, कार्य-कारण तारतम्य ढूँढ़ती है और इन आधारों पर सामान्य नियमों का प्रतिपादन करती है।"[4] इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र में विभिन्न खगोलीय पिण्डों के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन ज्योतिष शास्त्र की मूलभूत आवश्यकता है। परिणामतः राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

निरीक्षणात्मक पद्धति

"निरीक्षणात्मक अथवा पर्यवेक्षात्मक पद्धति राजनीतिक संस्थाओं के वास्तविक क्रिया-कलापों तथा प्रक्रियाओं का निकट से निरीक्षण और अध्ययन करती है। यद्यपि भौतिक विज्ञानों में, विशेषतः खगोल विज्ञान में इस पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है, निरीक्षणात्मक पद्धति का प्रयोग सामाजिक विज्ञानों में मुख्य रूप से होता रहा है। राजनीतिशास्त्र में भी मुख्यतः यही पद्धति प्रयोग में ली जाती है। अरस्तू ने निरीक्षणात्मक पद्धति का ही प्रयोग किया था। अपने ग्रंथ 'पॉलिटिक्स' की प्रथम पंक्ति में ही वह लिखता है कि "अवलोकन हमें बताता है....।" निरीक्षणात्मक पद्धति में स्वयं शोधकर्ता निरीक्षण द्वारा उपयुक्त सामग्री का संग्रह करता है. उस सामग्री का समानता के आधार पर वर्गीकरण करता है तथा कारण का अनुमान करके व्यापक नियम की कल्पना करता है।"[5] इस प्रकार निरीक्षणात्मक अथवा पर्यवेक्षात्मक पद्धति राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की प्राथमिक अध्ययन पद्धति है।

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र

"राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की जिज्ञासा के मुख्य विषय निम्नवत हैं-

1. राजनीतिक असहमति और उनके मतभेद के खगोलीय कारण।
2. सामाजिक और राजनीतिक संरचना का ज्योतिष शास्त्र से परस्पर सम्बन्ध।
3. ज्योतिषीय आधार पर राजनीति में विशिष्ट वर्गों का विश्लेषण।
4. राजनैतिक दलों की ग्रहीय स्थिति।
5. दबाब समूहों और विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओं का ब्रह्मांडीय आधार।
6. व्यक्ति और उसके राजनैतिक व्यवहार पर खगोलीय प्रभाव।
7. प्राचीन राजव्यवस्था में खगोल विज्ञान तथा उनके आचार्यों की भूमिका।
8. राजनीतिक विचारधाराओं में अंतर के ब्रह्मांडीय/ज्योतिषीय कारण।
9. मतदान-व्यवहार पर पड़ने वाले ग्रहीय गोचर के प्रभाव का अध्ययन।
10. राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के विविध रूपों पर ग्रहीय प्रभाव।
11. युद्ध और शांति के पूर्वानुमान में ज्योतिष शास्त्र की भूमिका का अध्ययन।"[6]

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र का प्रारम्भिक विकास

राजनीति विज्ञान के विश्लेषण के लिए जिस उपागम को विकसित किया गया है वह एक निश्चित पर्यावरण में काम करता है। "बींसवीं शताब्दी के मध्य में राजनीति विज्ञान में एक क्रांतिकारी परिवर्तन तब हुआ जब अमेरिकी राजनीति वैज्ञानिक '**डेविड ईस्टन**' ने राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए प्रणाली विश्लेषण को जन्म दिया। वर्ष 1953 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक '**पॉलिटिकल सिस्टम- इन्क्वायरी टू द स्टेट ऑफ पॉलिटिकल साइंस**' के अंतर्गत राजनीति से जुड़ी प्रक्रिया को राजनीतिक प्रणाली के रूप में समझने का सुझाव दिया। पुनः वर्ष 1957 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक '**इन अपरॉच टू द एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम**' तथा वर्ष। 1965 ई. में प्रकाशित अपनी

पुस्तक **'अ सिस्टम एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल लाइफ'** के अंतर्गत डेविड स्टर्न ने इस विश्लेषण पद्धति की विस्तृत व्याख्या की।

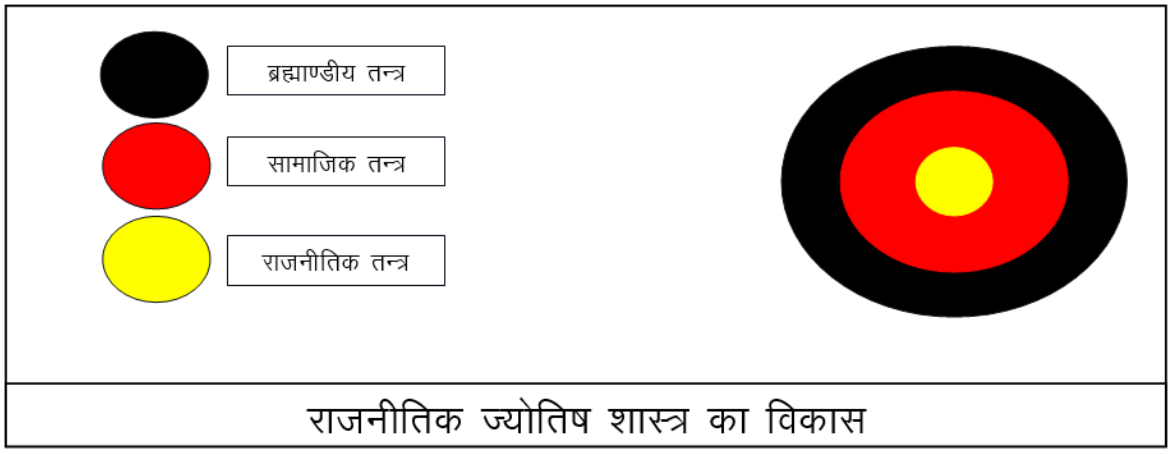

आकृति 1

लगभग इसी दौर में अमेरिका के ही राजनीति विज्ञान की विद्वान **'ग्रेवियन आलमंड'** ने डेविड ईस्टन के राजनीतिक प्रणाली की मॉडल को और अधिक विकसित करते हुए राजनीतिक विश्लेषण के लिए संरचनात्मक क्रियात्मक मॉडल को विकसित किया। वर्ष 1960 ई. में प्रकाशित पुस्तक **'द पॉलिटिक्स ऑफ द डेवलपिंग एरियाज'** में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। राजनीति विज्ञान की अध्ययन का ये उपागम राजनीतिक व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था की उप व्यवस्था मानता है। इसके अनुसार राजनीतिक व्यवस्था से लेकर सामाजिक व्यवस्था तक सभी एक पर्यावरण में काम करते हैं। यह पर्यावरण सभी प्रकार की उप व्यवस्थाओं को प्रभावित करता है। **'डेविड ईस्टन और ग्रेवियल आलमंड'** ने राजनीतिक विज्ञान के विश्लेषण के लिये जिस उपागम को विकसित किया, जो कि एक निश्चित पर्यावरण में काम करता है, वह विस्तृत रूप में ब्रह्माण्ड का एक अत्यन्त लघु अंश है। यदि राजनीतिक व्यवस्था अपने पर्यावरण से प्रभावित होती है तो बेशक ये कहा जा सकता है कि यह पर्यावरण, ब्रह्माण्ड की संरचना और उसकी प्रणाली से प्रभावित है क्योंकि प्रमाण की संरचना तथा उनकी कार्य पद्धति का सुव्यवस्थित अध्ययन क्षेत्र विज्ञान अथवा ज्योतिषशास्त्र करता है। इसलिए राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की परिकल्पना राजनीति विज्ञान के अध्ययन तथा अनुसंधान की नए द्वार खोलती है।

राजनीतिक ज्योतिषशास्त्र एक ऐसा विषय होगा जो राजनीति विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र की सीमाओं को स्पर्श करेगा। इसकी विषयवस्तु दोनों विषयों के क्षेत्र में आएगी। यदि सामाजिक प्रणाली एक विस्तृत व्यवस्था है तो राजनीतिक प्रणाली उस सामाजिक प्रणाली के भीतर एक उप प्रणाली है, परंतु ब्रह्मांडीय संरचना सभी प्रणालियों को आच्छादित करती है। ये ऐसा क्षेत्र है जहाँ सभी प्रकार के विज्ञान चाहें वे भौतिक हो या सामाजिक, एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। दोनों एक दूसरे के ज्ञान-भण्डार की वृद्धि करते हैं। संक्षेप में राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र समाज विज्ञान और भौतिक विज्ञान (आधुनिक विज्ञान) के अंतर-विषयक अध्ययन का क्षेत्र है।"[7]

निष्कर्ष

किसी भी विषय के स्वतन्त्र अनुशासन बनने के लिए कुछ मूलभूत मानदण्ड पूरे करने होते हैं जैसे- स्वयं का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र और अध्ययन की विधियाँ। राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र का अपना अर्थ, परिभाषा, अध्ययन क्षेत्र और

अध्ययन की विधियाँ हैं। निष्कर्षित रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो रहा है।

संदर्भ

1. शर्मा, विशाल, महाकुम्भ और राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र (शोध-पत्र), Science, spirituality and Tradition at Mahakumbh, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 24-25 फरवरी, 2025 को प्रस्तुत शोध-पत्र
2. पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-02, राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ, पृष्ठ-23, आईएसबीएन – 9789351310341, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-02, राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ, पृष्ठ-24, आईएसबीएन – 9789351310341, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4. पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-02, राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ, पृष्ठ-24-25, आईएसबीएन – 9789351310341, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
5. पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-02, राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ, पृष्ठ-25, आईएसबीएन – 9789351310341, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
6. शर्मा, विशाल, राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र : परिकल्पना, उद्भव क्षेत्र एवं विकास (शोध-शीर्षक), पृष्ठ-09, शोध उपाधि समिति की बैठक दिनाँक 15/10/2024 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा अनुमोदित शोध-प्रस्ताव।
7. शर्मा, विशाल, राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र : परिकल्पना, उद्भव क्षेत्र एवं विकास (शोध-शीर्षक), पृष्ठ- 07-09, शोध उपाधि समिति की बैठक दिनाँक 15/10/2024 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा अनुमोदित शोध-प्रस्ताव। आकृति
8. शर्मा, विशाल, राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र : परिकल्पना, उद्भव क्षेत्र एवं विकास (शोध-शीर्षक), पृष्ठ- 08, शोध उपाधि समिति की बैठक दिनाँक 15/10/2024 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा अनुमोदित शोध-प्रस्ताव।